अन्तरा-शब्दशक्ति

दोहा संग्रह

भाव सुमन

अशोक कुमार महिश्वरे

भाव सुमन

(दोहा संग्रह(

अशोक महिश्वरे

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN "978-93-5372-003-2"

अन्तरा-शब्दशक्ति

प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१९- अशोक महिश्वरे

मूल्य - ६०.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

BHAVSUMAN BY ASHOK MAHISHWARE

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

जिन परिस्थितियों से मुझे प्रतिदिन दो चार होना पड़ता है, जिस परिवेश को मै अपने आस पास भोगता हूँ, जिन विषमताओं से समाज को संघर्ष करते पाता हूँ, इन सबसे मेरे मन मे जो भाव उत्पन्न हुये उन्हे मैने भाव सुमन मे सजोंने का लघुतर प्रयास किया है।

मानव की मूक व वाचाल बेबसी, सत्ता का स्वार्थ, आधी आबादी की पीड़ा, रिश्तों की जर्जरता, धन का तांडव निकृष्ट व्यक्तिवाद, धार्मिक चादर के भीतर शोषण, बेरोजगारी, निम्न व मध्य वर्ग की पीड़ा, निम्नतर राजनीति, अन्नदाता की दुर्दशा, आतंकवाद, नौकरशाही पद-लोलुपता, ऐसे अनेकानेक विषय मन को उद्वेलित करते हैं, जिसकी परिणति है यह दोहा संग्रह।

किसी मुद्दे की पगडण्डी पर चलकर, तो कोई मुद्दे की चैड़ी सड़क पर सरपट दौड़कर सत्ता तक पहुँच जाता है। सत्ताधीशों का एक मात्र ध्येय यही होता है कि आगामी चुनाव में सत्ता कैसे प्राप्त होगी? जो कि सामाजिक न्याय के पथ का सबसे बड़ अवरोध है। इससे न केवल राष्ट्र का वर्तमान अपितु भविष्य भी दूषित होते बच न रहा है। इस कृति मे इन सभी पहलुओं को स्पर्श करने का सूक्ष्मतर प्रयास हुआ है।

मेरा किसी साहित्कि विरासत से कोई सरोकार नही है,न ही लेखन-दक्षता मुझे प्राप्त है। जो भी विचार मेरे मानस पटल पर उपस्थित हुए, उन्हे शब्दों में पिरोकर आपके समक्ष रखने का प्रयास मात्र किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कृति आपके हृदय में अपना स्थान पाने मे सफल होगी।

मेरे दिवंगत माता-पिता, गुरुजनों, ईष्ट मित्रों एंव सुधि पाठको के श्री चरणो मे समर्पित है मेरा यह ''भाव सुमन''।

सादर नमन

अशोक महिश्वरे
गुलवा,बालाघाट म.प्र.
08964829898

भाव सुमन

मेरा दुःख इतना बड़ा, आँसू देख रूआँस।
दिल मे इतने घाव है, दर्द न आवै पास।1।

पादप नित थाड़ा रहे, देता सबको मान।
मानव अपनी नीति का, क्या तुझको है भान।2।

हिंदी भाषा है जहाँ, मिला जगत मे मान।
पर अपने ही देश को, रहा न कोई भान।3।

सत्ता के तुम लालची, दूर नजर से देख।
कल तेरी करणी लगे, केवल कालिख लेख।4।

आरक्षण को मेट दो, मिले ज्ञान को मान।
आगे तब ही देश बढ़े, बढ़े वतन जग शान।5।

जाति नाम रक्षण करे,नही गरीबी ध्यान।
कितने ही खंजर भरे,सत्ता एकहि म्यान।6।

आरक्षण के नाम से,देश हो गया तंग।
रोटी अपनी सेंकते,सत्ता बनी मतंग।7।

सत्ता मद सिर पर चढ़ा,लड़ते नाना ढ़ंग।
इनको तो वर दीजिए,उड़ती रहे पतंग।8।

भारत माँ के दो चरण, सैनिक और किसान।
बाकी पर मैं क्या कहूँ, बस थोथे बलवान।9।

बस प्रभु मन मे चाह है,नित होना तुम संग।
कुर्सी मेरी हो अमर, नाना होवै जंग।10।

परम्परायें टूटती,घटता तब सम्मान।
रीता ही होता सदा,धरा जगत अवदान।11।

जिव्हा पट तब खोलना,पहले मन मे शोध।
मत ज्ञानी वरना कहो, बालक लगो अबोध।12।

प्रथम कदम बेटी पड़े,पावन ऐसा द्वार।
मंगल मारे गर्भ मे,पापी वह संसार।13।

नीर-क्षीर सा संग हो, रहे उड़त खिसियाय।
ज्यों ही साथी बूँद दो, खुशियाँ रहे मनाय।14।

पत्नी को पति चाहिए,जेब रहे भरपूर।
पति को पत्नी चाहिए,रहे मर्म धन दूर।15।

काया से जो था सबल,रहा घसीटा मार।
बलषाली ही छिन रहा,निर्बल का अधिकार।16।

जीवन फेरा चार का,चार दिनों का ठाट।
बिक जाएगा अंत मे,खुद भी यम के हाट।17।
रखो तनिक सा ध्यान तुम,हैं बेबस लाचार।
वक्त न कोइ जानता, अजब जगत व्यापार।18।

जंक्शन जैसा है जगत,आते जाते लोग।
भले कर्म कर ले यहाँ,मिले न फिर संयोग।19।

आते जाते वक्त का,सदा करो सत्कार।
मिले खुशी या गम कभी,जग जीवन का सार।20।

जो मन फिरता बावरा,वानर सा उत्पात।
कर्म अधम सा ही करे,धिक-धिक मानव गात।21।

माटी तन इठला रहा,पल माटी हो जाय।
माटी की जो लाज रखे,माटी शीश नवाय।22।

करो वन्दना नार की,सब सुख की आधार।
नित्य कर्म देती खुशी,सूना बिन संसार।23।

अपने दुख रोते सभी,दुख दूजे जो रोय।
ईश्वर ने जिसको रचा,मानव ऐसा होय।24।

इठलाने के दौर में,जीवन भार उठाय।
किसने दी ऐसी सजा,बचपन रहे लूटाय।25।

मेरा मुझमे है नही,मुझमे तेरा वास।
भेद यहाँ जो बूझ ले,जीवन उसका खास।26।
मानवता का मेल है,कुंभ दिये है नाम।
है वन्दन पावन धरा,जगत फलक पैगाम।27।

सारे दल सेवक दिखे,ओढ़े छाने माल।
जान चुका अब तो वतन,कठिन प्रेम की चाल।28।

आज गधा भी ताकता,मुफ्त उसे मिल जाय।
गधा गधा ही रह गया,केवल बोझ उठाय।29।

घर भी बॉटे मुफ्त मे,बिजली रहे लूटाय।
एक गधा ही कब तलक,सारा बोझ उठाय।30।

मन मे दुख पालो नही,यह जीवन का भार।
दुख अपना जो मेट ले,मनुज वही अवतार।31।

राह खुषी की मत तको,रच डारो तुम तात।
निर्धन या संसार मे, बड़े पते की पात।32।

छाने साढ़े चार तुम,मिल करके सरकार।
खोट मलाई अब दिखे,क्यों बोलो भरतार।33।

अपने-अपने ढंग से,बाँट रहे भगवान।
बलशाली इतने हुये,हम कैसे इन्सान।34।

ताकत जानी कलम की, होती है भरमार।
कागज काला कर रही, इतनी अब लाचार।35।

तिल को ताड़ बना रहे,केवल पाने वोट।
दिल मे ज्वाला जल रही,खा-खा करके चोट।36।

मत बाँटों तुम देश को,पल पल स्वार्थ काज।
फँसते दिख रहे पाश में,गिर जायेगी गाज।37।

हल्ला डूबा है सदन,चैनल पर बकवास।
घोड़े दाना लूटते,जनता ताके घास।38।

सरकारें चोरी करें,देश बचायें कौन।
जनता चाँवल खा रही,बुद्धि पड़ी है मौन।39।

कुम्भकरण नेता सभी,खाये नही अघाय।
सभी दलाली में लगे,राम रहे पछताय।40।

गाय कटे या मत कटे,आग यहाँ लग जाय।
नेता सेंके हाथ को,घर सूना पड़ जाय।41।

हम तो दोनो चोर है,उघड़ गया है राज।
मजबूरी ऐसी पड़ी,सज जाता है ताज।42।

देश ठिठुरता ठंड में,सोये कंबल ओढ़।
नेता मेरे देश के,सच में लगते कोढ़।43।

शंका पर ही जान ली,मानवता बेहोश।
भीड़ तंत्र अब दौड़ता,देश हुआ खामोश।44।
जीवन रिश्ता टोकरी,भरी रहे भरपूर।
खुशियों की खुशबू मिले,मद मत होना चूर।45।

कोई तो उलझा रहा,उलझे बारम्बार।
चालाकी सबकी दिखे,सुविधा के अनुसार।46।

लोकतंत्र गहरी निशा,मर्यादा सब भूल।
नाम कमाया अब तलक,बिखर चले सब धूल।47।

धन का ऐसा खेल है,कहते जिसे चुनाव।
कुर्सी पाने के लिए,ऊँचा देते भाव।48।

नेताजी अब दौड़कर,ऐसे छूते पाँव।
दुर्लभ तीनो लोक में,ऐसा पावन ठाँव।49।

दौड़ भाग में है लगे,नेता चाटूकार।
पल भर भी चैन कहाँ,पाँच बरस का सार।50।

कड़ी परख है दास की,बिना परख का राज।
अवगति इसकी क्या कहूँ,सच कलयुग है आज।51।

जो आई नन्ही परी,वह देवी अवतार।
बेटी तो हरती सदा,मात-पिता का भार।52।

कोख पले जीवन जहाँ,आँचल जीवन सार।
देवी का सद्रूप लगे,माता जग बलिहार।53।
पीड़ा मन की जो पढ़े,ज्ञानी वही कहाय।
कागज का लेखा पढ़े,समझ कहाँ कुछ आय।54।

उदित चाँद सूरज सदा,नित्य नियम को पाल।
मैं मानव की क्या कहूँ,रोज उधेड़े खाल।55।

सदा उजाला है कहीं,कुछ रहते अँधियार।
दाता से मैं पूछता,कैसा तेरा प्यार।56।

बड़े बढ़े अब देश में,छोटे भी खुशहाल।
बीच बीच में पीसते,कोस रहे निज भाल।57।

मात-पिता आशिष जहाँ,जीवन तब खुशहाल।
बैरी चाहे जग भला,बाँका होय न बाल।58।

रावण फिर से जल उठा,राम न आया राज।
जलते-जलते गिर पड़ा,बन करके वह गाज।59।

सत्ता के तुम दास हो,बनो न सत्ताधीश।
फँसे काल के फेर में,हार गये खुद ईश।60।

लेखक हो तुम शोध लो,दूषण भरा समाज।
रोती है माँ भारती,दुख हारी कर काज।61।

तुम तो माँ के लाडले,सदा सजाते ताज।
ऐसा बल तेरी कलम,हिल जाते हैं राज।62।
माता की उम्मीद हो,आशा भी विश्वास।
क्या होता इस देश का,तुम ना होते काश।63।

सब तो स्वार्थ में लगे,तुम परमार्थ काज।
उठा कलम फिर छेड़ दो,जंग लाड़लो आज।64।

जग में लेखक ना रहे,जग तिनके का ढ़ेर।
हालाती तूफा उड़े,निश्चित देर सबेर।65।

यह जग कपटी जाल है,होता नित्य फरेब।
या जग मानव जाति का,सबसे भारी ऐब।66।

अवगुण के बल पर खड़ा,जीवन मानव जात।
फिर कैसे खुद को कहें,सब जीवों का तात।67।

दुर्गुण इतने थक गये,लगते है बेजान।
जो इनको ढ़ोता अधिक,वह उतना बलवान।68।

अवगुण काया ढ़ेर है,मानव कहे महान ।
क्या गलती मुझसे हुई,शरमाता भगवान।69।

कौन बड़ा इस देश में,या धन या है ईश।
उसके दर अवनत नहीं,झुक जाता धन शीश।70।

सदियों से जग खोज रहा, धरती पर अवशेष।
वास ज्ञान कण-कण जहां,मेरा भारत देश।71।

नजर बुरी न डाल सके, डर भागे लखि भेष।
जग साहस अपना खड़ा,मेरा भारत देश।72।

फेल हुये इक्के सभी, जोकर भी नापास।
सावन भर की हरियाली, मिले न फिर तो घास।73।

उस पीड़ा पर क्या कहूँ, दिल ने खाई चोट।
अपनेपन की बेबसी, बन्द हुए दो होंठ।74।

चाहे सब कुछ हार लो, पर जीतो विष्वास।
अवसर आते देख लो, केवल तुम ही खास।75।

सरिता अब सूनी भई, मन भी हैं सूनसान।
दोनो पानी उड़ गया सोच पड़ा भगवान।76।

सब उलझे उलझन यहाँ, संग चले ले जाल।
जो सुलझा पाया इसे, उन्नत ऐसा भाल।77।

धरम भरम मे फाँस के, बैठा मौज उड़ाय।
ऐसा कौन पिषाच है, दिखता देख न पाय।78।

अवगुण पहला त्याग दो, मन मे बसा घमंड।
कब मेटे किसको पता, नालायक उद्दण्ड।79।

संगी सबके हो भले, सब तो अपने लोग।
धन मद के फेर में, मत इनसे ले जोग।80।
खोज लिया विज्ञान ने, उत्तर सभी सवाल।
हर मन मे भर नीति को, उन्नत होवै भाल।81।

दूजे को क्यों तोलता, लिये तराजू हाथ।
बस अपने को तोल ले, चमक उठेगा माथ।82।

मुझे वोट की भूख है,तुझे नोट की चाह।
आशा मन दोनो पले,दोनो चलते राह।83।

केवल उतना ही लिखो, आते दिल में भाव।
वर्शा जल मैली नदी, जैसे लगे बहाव।84।

ईश्वर का यह बाग हैं, उड़ जाये कब धूल।
दे खुशबू जग को सदा, नित्य सुवासित फूल।85।

अपनी बाते डालते, मुख दूजे का खोल।
विपदा पास बुला रहे, नेता खोले पोल।86।

धरा धर्म धन तीन का, सोच करो उपभोग।
बल इनके जीवन यहाँ, मानव तन संयोग।87।

मंदिर नदिया खोजते, माथे तिलक सजाय।
दूजा दुख देखे नही, प्रभु को कैसे भाय।88।

जो जग के हैं सारथी, बन जाते है दास।
सखा धर्म भी पालते, न्याय नीति के पास।89।
कर्म विमुख जो हो रहा, देते हैं उपदेश।
युगों युगों तक जो अमर, प्रभु तेरा संदेश।90।

नित नूतन नारे गढ़े, सत्ता खातिर लोग।
जनता की छाती चढ़े, भोगे छप्पन भोग।91।

पद-मद में डूबे रहे, राजनीति में लोग।
सत्ता पाकर भोगते, पाँच बरस बस भोग।92।

जो जन्मे हैं इस धरा, दिखता कहाँ लगाव।
मरहम की तो छोड़ दो, देते केवल घाव।93।

अल्हड़ जीवन जो मिला, ईश्वर से सौगात।
क्यों इसको उलझा रहा, मानव तू बेबात।94।

नाना बिखरे रंग है, जी लो इनके साथ।
मस्त रहो मस्ती सभी, जीवन उसके हाथ।95।

अधरों पर मुस्कान हो, मुखड़ा सुमन समान।
अनुपम ईश्वर ने दिया, मानव तन अवदान।96।

हरी भरी धरती यहाँ, नारी जीव महान।
इठलाती रहना सदा, धरा ईश सम्मान।97।

अजब पियक्कड़ देश में, गिन लो जब मतदान।
उस मंदिर का कब भला, ऐसे जब भगवान।98।
कोयल भी कम कूकती, आता देख बसंत।
बाते कम है ज्ञान की, विरले दिखते संत।99।

हम तुम सबने भोग ली, राजनीति हर दाँव।
दूजा तीर चला दिया, भरा न पहला घाव।100।

अवगुण जिसमें सब भरे, नेता उसको मान।।
अहि गिरमिट कागा सभी, शरमाता अब श्वान ।101।

श्वानो की अब दुम सी, नेताओ की जात।
ज्ञान बरन बस कर सके, केवल इनकी गात।102।

नेता ऐसा जीव है, आ जाये औकात।
तीन लोक चैदह भुवन, समझ न पाये बात।103।

पाँव सभी के छू रहे, डटते आसन मार।
झोंके सारा जोर तब, पाँच बरस अधिकार।104।

हाथ जोड़ गलियन फिरे, माँगे घर-घर वोट।
फर्क तनिक भी न पडे, खाते लाखो चोट।105।

कौन देव जो वर दिया, नेताओ को राज।
देश भले ही जल उठे, गिरे न इन पर गाज।106।

जल सारा कीचड़ भया, भैंसन मारी लोट।
ऐसी हालत देश की, नेताओं की चोट।107।

फूली सरसो अब धरा, घिर आया मधुमास।
कोयल कूके डाल पर, भौरा मन उल्लास।108।

धरती मे यौवन भरा, पीत बरन ही छाय।
अंग-अंग पुलकित हुआ, सारे जीव लुभाय।109।

पीकर मरते देश मे, उजड़े घर परिवार।
धन तो कोई जोड़ता, शर्म कहाँ सरकार।110।

रही गरीबी तो नही, जो पहले अभिशाप।
सुख सारे भोगे यहाँ, बस इकलौती माप।111।

बक-बक कर गाली यहाँ, रच डाला इतिहास।
आने वाले दिन सभी, लोकतंत्र परिहास।112।

कोई जीये या मरे, उसको धन की चाह।
नित-नित गिरते ही चलें, जो चुनते यह राह।113।

लोकतंत्र खटिया यहाँ, नेता खटमल मान।
चूसे पर दिखते नही, बाकी है बस जान।114।

वंदन है माँ भारती, रज चरणन की आस।
दूर कभी करना नही, नित ही रखना पास।115।

जग जंगल हिंसक पशु, नखधारी सब ओर।
रक्षा करना मात तुम; तन-मन-धन सब कोर।116।
मनसा वाचा र्कमणा, दिल दुखे नही और।
मैं तो नित पलता रहूँ,शीतल चरणन ठौर।117।

नाच उठी सारी धरा, तू आई जब द्वार।
तन मन मे फुर्ती भरी, फूलन मस्त बहार।118।

मै गीता पढ़ता चलूँ, तू तो पढ़े कूरान।
क्यों भिड़ते आपस यहाँ, दोनो ही भगवान।119।

मै तो करता आरती, देते रहो अजान।
नीर हवा धरती सभी, कौन किसे पहचान।120।

मेरे दिल में तू बसे, दिल तेरे मै राज।
केसर माटी बोलती, सुन इसकी आवाज।121।

धर्म मनुज कब पालता, मानव उसको पाल।
मानवता को छोड़ के, कैसे करे कमाल।122।

टोपी टीका में उलझे, हाथ यहाँ बेकार।
बिसरे जब इस भेद को, होगा नव अवतार।123।

मन में बसता प्राण जो, धर्म किसे है ज्ञात।
जीवन दाता अन्न की, बोलो कोई जात।124।

शब्द जुदाई है बड़ा, जो दे इतनी पीर।
अन्तस भी तो दुख रहा, दे न सके है तीर।125।
दर्द जुदाई जानता, जो पाया है भोग।
मन पीड़ित बहते नयन, मूर्च्छा खाते लोग।126।

कठिन जुदाई की घड़ी, दिल पाथर सा पाय।
जीता है तन खोखला, मन से तो मर जाय।127।

ढ़ाढ़स देते लोग हैं, कैसे मन समझाय।
ज्ञान सभी का तो यहाँ, अंसुवन मे बह जाय।128।

बोझ जुदाई है बड़ा, वक्त भरे यह घाव।
डर डरकर वह बैठता, जीवन ऐसी नाव।129।

बूढ़ा तन कितना भला, मन से रहे जवान।
ज्ञान तजुर्बा बाँटता, नित-नित पाता मान।130।

रख मन में सद् लालसा, ले ले फिर संकल्प।
रोक सके कब कदम कों, कोई कहाँ विकल्प।131।

असद् लालसा मत रखों, दलदल सा है फेर।
ज्ञान हुआ हो तब तलक, हो जाती है देर।132।

भले-बुरे गुण है भरे, धरो भलाई हाथ।
संग बुराई जब चले, जीवन पीटे माथ।133।

तन माटी का बावरा, कुछ दिन का अधिकार।
बिन इसके जीवन कहाँ, प्रेम जगत आधार।134।
है तो नित ही चाँदनी, खुशबू सा है सार।
जीवन की यह डोर है, प्रेम जगत आधार।135।

लाज बचाते वतन की, हो गये जो कुर्बान।
नाम अमर जो कर गये, उन पर बड़ा गुमान।136।

राजनीति अब खो चुकी, अपना सब सम्मान।
गणिका भी इससे भली, पाले सदा ईमान।137।

प्यारा मुख जैसे सुमन, बेच रही जो फूल।
हर पल जीवन लग रहा, जैसे चूभे शूल।138।

उमर बालपन दिख रहा, मुख मंडल गंभीर।
काल हँसाता है कभी, देता भी है पीर।139।

हर आहट को ताकती, जाती दौड़े पास।
खेल खिलौना छोड़कर; जीवन बस संत्रास।140।

छोटी सी है वय मगर, जीवन बोझा ढ़ोय।
कौन लिखा यह करमगति; बुझ सके ना कोय।141।

स्वान गरजता चल रहा, भोंक रहा वनराज।
दुर्दिन इससे क्या बड़ा, भोग रहा जो आज।142।

बल चूजें पर क्या कहूँ, झपट रहा वह बाज।
तनिक संभालो आपको, आया ऐसा राज।143।

सियासती लाशें यहाँ, गम डूबा परिवार।
जति धर्म सब त्याग के, दुख बाँटे संसार।144।

गिरती लाशें रोज अब, ओढ़े चादर सोय।
खता कहाँ उनसे हुई, रक्तन आँसू रोय।145।

आतंकी धमनी बहे, रक्त बीज का रक्त।
लाषे गिनना छोड़ दो, मेटो इनका तख्त।146।

अजब-गजब की भीड़ है; बड़ा निराला खेल।
राजनीति घानी लगे, रेत निचोड़े तेल।147।

सत्ता आँगन है भला, नाचे सकल फकीर।
माल दबाते है भले, छाती को भी चीर।148।

कोई खाली हाथ ना, कर लालच व्यापार।
जी भर इसको बेच लो, मुठ्ठी में संसार।149।

देर भले ही है यहाँ, होता कब अँधेर।
जाना ऐसी ना गली, जहँ कालिख का ढ़ेर।150।

बक गाली नेता बनूँ चढ़ने लगा बुखार।
लोकतंत्र क्रंदन करे, बख्शो मुझको यार।151।

रक्त रहे तन मे भरा, काया की जो आस।
बाकी जीवन बाँट दो, चल जायेगी सांस।152।
नाता जोड़ो रक्त दे, बड़ा मनुज का कर्म।
तन तेरे बढ़ता रहे, मानवता का मर्म।153।

लहू साथ जाता कहाँ, आखिर होना राख।
बन दानी कोई बचा, बढ़ जायेगी साख।154।

दिल से दिल को जोड़ना, मानवता का सार।
पुण्य कमा थोड़ा यहाँ, जाना हाथ पसार।155।

बालापन देवत्व है, युवक नदियाँ बाढ़।
बूढ़ा गर्मी की नदी, जीवन सार प्रगाढ़।156।

निंदा उसकी कीजिये, जिसमे बाकी शर्म।
लाशे गिनता जगत मे, कायरता का मर्म।157।

कीमत देता जान की, पड़े देश भरमार।
सुमन चढ़ा अर्थी भली, सो जाती सरकार।158।

तुम मेरी छाती चढ़ो, मै तो पूजूं पाद।
शांति चदरिया ओढ़ के, करता जाऊँ श्राद।159।

भारत मे कितना लहू, नाप सके कब कोय।
बलिहारी ऐसा वतन, जग दूजा ना होय।160।

दहशत गर्दी गर्भ का, मेटो नाम निशान।
ढूँढे से भी ना मिले, जग मे पाकिस्तान।161।
काया सारी छिद गयी, फिर भी सहता घाव।
जड़ से इसे उखाड़ दे, चल दे आखिर दाँव।162।

पुण्य चढ़े तब शीश पर, होता दुश्मन वार।
रणचण्डी अवतार ले, षीश गले मे धार।163।

हाड़ तोड़ दो पाक की, सत्तर धारा मेट।
दुश्मन दर पर रोक दो, जाँबाजों की भेंट।164।

संवादो के फेर मे, हुई बड़ी ही देर।
आँख मूँद कर वार कर, वरना बस अँधेर।165।

आयुधों के द्वार खुले, ताकत जग ले देख।
कर्म मिटा दे भाग में, गलत हुआ जो लेख।166।

बिगुल बजा कर वार कर, काट रखो वह हाथ।
नमक हमारा भोगता, बैरी देता साथ।167।

राजनीति वह कुंड है, पलते सारे पाप।
बिलख-बिलख रोते कभी, बन जाते फिर बाप।168।

फौलादी मन ले चला, थाड़ा पहरेदार।
जां लुटाते वतन पर, भारत के अवतार।169।

सारे सुख को त्यागता, सहता भारी ठंड।
मन जिसका डिगता नही, सहता धूप प्रचंड।170।
सारे जग मे नाम है, भारत कहे जवान।
वक्त पड़े ललना खड़े, हो जाते कुर्बान।171।

रक्त कर्ज चुकता नही, कोशिश करो तमाम।
कण-कण बसते है सदा, अमर जहाँ में नाम।172।

हालाती जीवन पड़े, कभी छाँव कभी धूप।
धरो सदा पग को सधे, दुनिया अंधा कूप।173।

पानी बहुत पिला दिया, पुण्य कमाया ढ़ेर।
पी पानी सियार हुआ, मुझ पर ही अब शेर।174।

पानी-पानी को गया, शर्म न तोहे आय।
जग तेरे मुख थूँकता, दुर्दिन ऐसा पाय।175।

धनपति खेले खेल सभी, आये या ना आय।
प्रतिभा निर्धन की बड़ी, मन भीतर मर जाय।176।

धन बल सब कुछ ले लिया, रहा न कुछ भी शेष।
निर्धन जीवन इस धरा, केवल थोड़ा भेष।177।

ले कर्जा तू ब्याज भर, फिर भी ठोके ताल।
मेरे बल पर सोच तू, जेब भरा हो माल।178।

किस्मत मेरी तू लिखा, क्यों इतना बदहाल।
कदम-कदम जीवन सदा, मुझको चलता साल।179।

छद्म युद्ध करके सदा, जो दे हमको पीर।
सब कुछ यहाँ विराम दो, छाती रख दो चीर।180।

चाहे कितने स्वांग रचे, नही भरोसा यार।
यह कुत्ते की दुम है, थोथा सब व्यवहार।181।

सुंदर तन पर मोहता, मन पागल बैचेन।
पछतावै की जिन्दगी, चैन कहाँ दिन रैन।182।

दरिया बहता वक्त का, बनकर बह तू नाव।
उलट चले जो चाल के,मिलता केवल घाव।183।

यही काल तो ईश है, पल मे करे कमाल।
बरसो से जीता रहा, संग चला ले काल।184।

पूजा करके वक्त की, वक्त न कर पूजाय।
कालजयी वह बन गया, मर्म समझ जो पाय।185।

मै तो ठहरी छिपकली, काट रहा तू पूँछ।
तू बिल्कुल डरना नही, देखन की यह मूँछ।186।

बालावन देवत्व है, युवक नदिया बाढ़।
बूढ़ा गर्मी की नदी, जीवन सार प्रगाढ़।187।

कागज फौजी खा गया, वतन बचाने आन।
नेता खाये वतन को, केवल झूठी शान।188।
कोटि-कोटि कर उठ रहे, करते है जयगान।
अभिनंदन वंदन करे; जगत बढ़ाया मान।189।

मुरख सोया महल मे,बेघर ज्ञानी वास।
पीड़ा से गूँगा भया, सह-सहकर संत्रास।190।

मालिक अब चाकर हुआ, होकर गूँगा थार।
चाकर के संत्रास से, दिल अंसुवन के धार।191।

मन से काहे थक रहे, तन लागा बीमार।
काँटा जो तोकु गड़े, देना जड़ से उखार।192।

आँसू कारण मत बनौ,अधमाई पहिचान।
खुशियाँ बाँटे जो सदा, वह साचा इंसान।193।

आजादी का फल मिला, पी ले आँसू घूंट।
जनता तेरे भाग को, लेत सयाना लूट।194।

मैं में मेरा कुछ नही, सब तेरा ही हाथ।
जीवन पल ना जी सकूँ, ना हो तेरा साथ।195।

गिध्द बने हैं नर यहाँ, नारी केवल मांस।
कर्म देख ऐसा लगे, क्यों चलती है सांस।196।

दबा हुआ कानून है, नेताओ के पाँव।
यार बली के हैं सभी, बेबस देते घाँव।197।
हिंदी चिंदी हो रही, अंग्रेजी से नेह।
अपने ऐसे रुष्ट है, जीवन पर संदेह।198।

जीवन बरसे दुख यहाँ,सुख की छोड़ा आस।।
अब इतने में मस्त हूँ,चल जाती है सांस।199।

ऊँचे उड़ना मत गगन,सीखा नही उड़ान।
पाखी पर की शक्ति से, बन पहले बलवान।200।

बाँट रही खैरात जो, यह क्या राजा धर्म।
हाथ सबल सबके यहाँ, केवल देना कर्म।201।

भूख सभी का जो हरे, हुआ यहाँ बदहाल।
आज तरसते दिख रहा, रोटी चाँवल दाल।202।

तन को पूरा झोक लो,मन को रखो पवित्र।
कूड़े शीशी है पड़ी, बास आ रहा इत्र।203।

काज कभी कैसे फले, लालच जिसका मूल।
लगती फिर सबसे बड़ी, जीवन की जो भूल।204।

माता तेरी बेटियाँ, घूट रही है देश।
अब फिर से अवतार लो, खोलो अपने केश।205।

काज नही छोटा यहाँ, करना काज गुमान।
इज्जत की चटनी भली, भोग नही अपमान।206।
धर्म न भूलो तुम यहाँ, कर्म रखो नित याद।
धर्म धरा का साथ है, कर्म मरण के बाद।207।

काज सूत के दिख रहा, घर पाया संस्कार।
बेटी तो हरती सदा, मात-पिता का भार।208।

बुरे कर्म के दाग को, फिरौ छिपाते लाख।
जीवन भर वह झाँकता, तन होने तक राख।209।

मन में जब संतोष नही,कहाँ धरे सुख पाँव।
दुःख ही दुःख बरसे सदा, मिले न शीतल छाँव।210।

धन ताकत अरू झूठ है, सत्ता के हथियार।
तीनो जिसके पास है, भोग रहा संसार।211।

जो जितना झूठा बड़ा, सत्ता उसके पास।
राज नही आगे बढ़े, मिल जाता सन्यास।212।

सेवा कुर्सी माँगती, यह अचरज की बात।
बिन कुर्सी सेवा करे, धर्म यही है तात।213।

कुर्सी उसको चाहिये, करता जय-जयकार।
घूम-घूमकर गली-गली, देता तुझको सार।214।

लोकतंत्र अभिशप्त क्यों, कैदी असाधु हाथ।
कौन छुड़ाये कैद से, कौन बनेगा नाथ।215।

इतना भी तो मत गिरौ, जहाँ नही आधार।
गिरना तब गलती सही, खुद को सको उबार।216।

लूट सको तो लूट लो, निर्भय होकर आज।
सारी धरती ना मिले,ऐसा सुन्दर राज।217।

भाई चारा बाँट कर, दिल मे कैसे राज।
धर्म बटा खुलकर यहाँ, बटता चला समाज।218।

तीन शब्द मुख बोलकर, देता कोई तलाक।
अवगति नारी देख कर, अल्ला खड़ा अवाक।219।

कभी भरोसा न्याय पर, कभी नही विश्वास।
इनकी लीला अजब है, सुना रहे बकवास।220।

रक्त अगर थोड़ा करो, सद् इच्छा से दान।
तरस रहा जिसके लिए, बन सकते भगवान।221।

अच्छाई का पथ सुखद, गई बुराई हार।
बैर घृणा को जीतता, सदा बाँटकर प्यार।222।

जलते बस पुतले यहाँ, रावण करता राज।
गलियाँ रावण वाटिका, सीता गिरती गाज।223।

खेली अपनी जान पे, इतना मै तड़पाय।
किलकारी पहली सुने, प्रसव ताप बिसराय।224।
कठिन परीक्षा जगत में, माँ बच्चे को जाय।
पीड़ा इतनी सह रही, ईष्वर क्या सह पाय।225।

माता से ममता लभै, लभता पहता ज्ञान।
सकल कर्म सीखा गई, क्या देता भगवान।226।

पलने मे मै झूलता, राजा जैसी शान।
माता डोरी हाथ मे, ललचाते भगवान।227।

मास उदर नौ पालती, रस सींचे निज देह।
मेरे हित भोजन करे, ऐसा अनुपम नेह।228।

कर पूजन माँ माँगती, बाधा अपने भाल।
पीर जरा भी दे चले, माता उसकी काल।229।

तन पर तो चिथड़े पड़े, करती है श्रृंगार।
अबला सी लगती कभी, बन जाती अंगार।230।

पेड़ खुदा माता कली, मै तो फूल समान।
नही उदर से जन्म लिया, कैसा रब को भान।231।

माता ऋण चूके नही,जन्मो तुम सौ बार।
सेवा करके मात की, थोड़ा सूद उतार।232।

सबने आँखे खोल दी, लाली पूरब देख।
छोड़ घोसला चल पड़े, खोज भाग का लेख।233।
कर्म चला जीवन डगर, भर मन नव उल्लास।
गगन धरा सागर तलक, शोधे आखिर सांस।234।

रखे भरोसा शक्ति निज,हर पल दे जो साथ।
उस बल मत इतरा कभी, जो ना अपने हाथ।235।

कदम-कदम ऐसे बढ़ो, तनिक न होवै भूल।
एक भूल बन जात है, जीवन भर का शूल।236।

धर्म पुजारी वह बना, रचता नित पाखण्ड़।
बिन चाकू छूरी बिना, कर देता नौ खण्ड।237।

मानव-मानव क्यों जुदा, क्या है ऐसा भेद।
आपस मे ऐसे भिड़ें, रब मन होता खेद।238।

थप्पड़ जूते मार लो, करलो लाखो चोट।
सब सहने आगे खड़ा, केवल देना वोट।239।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - अशोक कुमार महिश्वरे
जन्म - 25 मई 1971, ग्राम गुलवा, जिला बालाघाट (म.प्र.)
पिता - स्व. श्री रामाजी महिश्वरे
माता - स्व.श्रीमती शकुंतला देवी महिश्वरे
पत्नी - श्रीमती तुलसी महिश्वरे
पुत्र-पुत्री - कु. शालू, कु. शिखा, हिमांशु, कु. पूर्वा एवं मयंक
शिक्षा - स्नातकोत्तर (हिन्दी एवं अंग्रेजी साहित्य)
मो. - 8964829898
ई मेल - amahishware71@gmail.com
विधा - कविता, कहानी, व्यंग्य एवं स्वतंत्र लेखन
कार्यक्षेत्र - शिक्षक
पता - गुलवा, जिला- बालाघाट (म.प्र.)
प्रकाशन -1. स्त्री एक सोच (साझा संग्रह)।
2. पंछी नील गगन के (साझा संग्रह)।
3. दोहांजली (दोहा दंगल)।
सम्मान - मातृभाषा उन्नयन सम्मान

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-003-2
मूल्य- 60/-